प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/31

पशुओं में ब्रुसेलोसिस

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

पशुओं में ब्रुसेलोसिस

परिचय

यह एक जीवाणु जनित संक्रामक बिमारी है जो गाभिन गायों में खास तौर पर गर्भ के 6–9 महीनें में गर्भापात कराती है। यह गायों के झुण्ड में तेजी से फैलती है और इसमें काफी संख्या में गर्भपात देखने को मिलता है। यह गायों में होने वाले गर्भपात का सबसे प्रमुख कारण है।

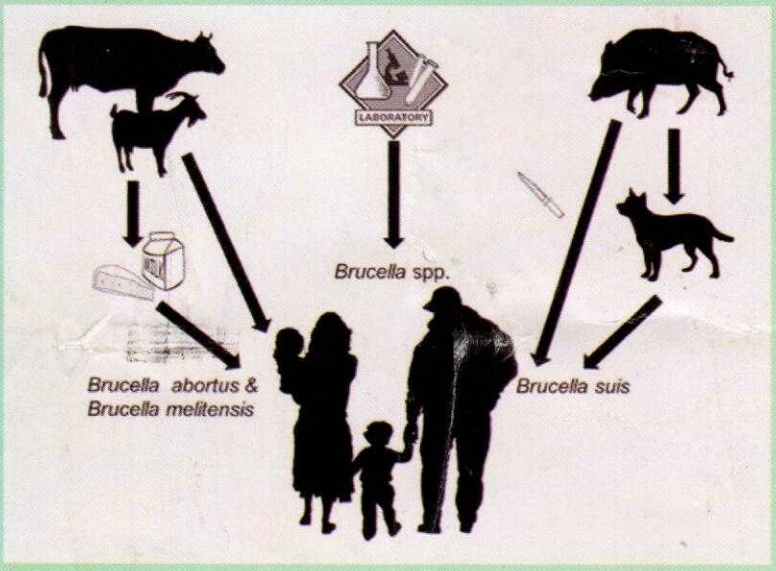

रोग का कारण –

- गायों एवं भैंसों में यह बिमारी मुख्यतः ''ब्रुसेल्ला एबोरटस''' की वजह से होती है जबकि ''ब्रुसेल्ला मेलिटेनसिस'' मुख्यतः बकरियों एवं भेड़ में संक्रमण करता है।
- कम उम्र के पषुओं की तुलना में गर्भ धारण योग्य पषुओं में इस जीवाणु के संक्रमण की संभावना कई गुणा ज्यादा होती है।

रोग का प्रसार :-

- गर्भपात के बाद निकलने वाले स्राव और भ्रुण में यह जीवाणु भारी संख्या में पाये जाते है।
- इस स्राव से दुषित चारे और पानी के द्वारा यह जीवाणु स्वस्थ पषु के षरीर के अन्दर पहुॅचता है।
- गर्भपात में निकले भ्रुण और जेर को कुत्तो या किसी अन्य माध्यमों द्वारा दुसरे जगहों तक ले जाने से यह संक्रमण दुर–दुर तक फैल जाता है।
- संक्रमित सांढ़ के वीर्य का इस्तेमाल कृत्रिम गर्भाधान के लिए करने से भी यह बिमारी फैलती है।

रोगजनकता एवं लक्षणें-

- इस जीवाणु में गर्भित गर्भाशय, थन, अण्डकोष, लसिका ग्रन्थि, जोड़ों आदि में जाकर स्थापित होने की प्रवृति होती है।
- इसके कारण भ्रुण के झिल्लीयों में सुजन आने लगता है और गर्भदल (कॉटिलीडनस) में सड़न आने लगते हैं जो गर्भपात का कारण है।
- गर्भपात समान्य तौर पर गर्भावस्था के 6–9वें महीने में देखने को मिलता है।
- सांढ़ में अण्डकोष में सुजन हो जाता है।

रोग से बचाव :-

- सभी गर्भपात को ब्रुसेलोसिस द्वारा मानकर झुंड के अन्य पषुओं के बचाव का प्रयास करना चाहिए।
- भ्रुण, भ्रूणीय झिल्ली, गर्भनाल आदि एवं अन्य स्राव को अच्छे से विसंक्रमित कर

हटाना चाहिए।

- आवारा कुत्तों को गौषाला में नहीं आने देना चाहिए।
- खरीदे हुए नये पषुओं को अलग रखना चाहिए और ब्रुसेल्ला के लिए परीक्षण करना चाहिए। नकारात्मक परिमाण आने पर ही उन्हें गौशाला में अन्य पषुओं के साथ रखना चाहिए।

टीकाकरण :-

- इस बिमारी से बचाव के लिए प्रभावकारी टीका उपलब्ध है। ब्रुसेल्ला कॉटन स्ट्रेन –19 को 4–8 माह के बछड़ों में लगाया जाना चाहिए।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- पंकज कुमार,अजीत कुमार एवं सरोज कुमार रजक

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN